

are not available. May I know from the hon. Minister what is the total amount that has been earmarked for the translation of books in Hindi as well as in regional languages and would you propose to increase the quantum of money for this purpose?

DR. PRATAP CHANDRA CHUNDER: I have already told this House that so far as the N.B.T. subsidy is concerned, it has not yet been extend to regional languages. We are considering this and after it is finalised, I shall be in a position to tell what will be the amount available for English and other languages.

चावल का निर्यात

* 740. श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' : क्या कृषि और सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का विचार मांग से अधिक मात्रा में एकत्रित हुए चावल का अपने भंडार से निर्यात करने का है ; और

(ख) यदि हां, तो इस के फलस्वरूप कितनी विदेशी मुद्रा की आय होने की आशा है ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE AND IRRIGATION (SHRI BHANU PRATAP SINGH): (a) and (b). In view of the comfortable stock position of cereals with the public agencies, particularly in regard to rice, it has been decided to allow export of limited quantities of rice, which can be conveniently spared without endangering the needs of the public distribution system. The amount of foreign exchange likely to earned by these exports will depend on the quantities actually exported and prices obtained and it is not possible to estimate this as yet.

श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री महोदय ने अपने उत्तर के 'क' और 'ख' खण्ड के उत्तर में यह कहा है कि

सार्वजनिक एजेंसियों के पास भनाज की विशेष कर चावल का सुगम स्टाक स्थिति की दृष्टि में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की आवश्यकताओं को खतरा पहुंचाएँ बिना सुगमता से सुगम की जा सकने वाली चावल की सीमित मात्रा को निर्यात करने की अनुमति देने का निर्णय किया गया है।" मैं जानना चाहता हूँ कि चावल खाने वालों की संख्या देश में 70 प्रतिशत है और पंजाब, असम, केरल आदि प्रदेश उत्तर बिहार आदि बहुत से प्रदेश ऐसे हैं जो चावल भोगी हैं, उनकी संख्या को देखते हुए क्या चावल एजेंसियों के पास इतना चावल है जिससे कि वे सुगमता से सीमित मात्रा में विदेशों को चावल भेजने के लिए प्रस्तुत हो सके ?

श्री भानु प्रताप सिंह : श्री भानु चावल का भंडार इस समय लगभग 9 मिलियन टन है और यह स्टाक इतना बड़ा कभी नहीं था। यह हमारे अनुमान के अनुसार है। अब तक कितना पब्लिक डिस्ट्रिब्यूशन सिस्टम का ग्राफ ट्रेक रहा है उस को देखते हुए तीन वर्ष तक के लिए चावल काफी है। फूड फारवर्ड के काम में भी जो राज्य सरकार चाहे वे पूरा वा पूरा फूड प्रेन चावल की शकल में काम में ला सकती है।

श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अध्यक्ष महोदय, अभी मंत्री महोदय ने कहा है कि सीमित मात्रा में चावल का निर्यात होगा। मैं जानना चाहूंगा कि वह सीमित मात्रा क्या है ? दूसरी बात मैं यह जानना चाहूंगा कि किन किन देशों को कितनी मात्रा में आप चावल भेजना चाहते हैं ?

श्री भानुप्रताप सिंह : अभी तो एक बड़ा सौदा हुआ है जो सोवियत यूनियन के साथ हुआ है कि तेल के बदले में दो लाख टन चावल भेजा जाएगा। कुछ चावल हमने मारिशस को दिया है। परन्तु राज्य सरकारों को भी यह अनुमति दे दी है कि यदि वे चाहें और वे चाहें ऐसा प्रबन्ध कर सकें तो तीन हजार टन तक वे निर्यात कर सकती हैं।

DR. VASANT KUMAR PANDIT: Sir, will the hon. Minister inform the House what particular varieties of rice will be exported out of the quota that has been fixed for export. I am also concerned with the floor price of rice which is going to be determined again because of which exports are affected. Hence, before we consider the export of rice goods, the floor price has to be fixed. There is a lot of uncertainty about it in the mind of foreign importers. Which particular qualities or varieties of rice are being allowed exported and when will the floor prices fixed?

SHRI BHANU PRATAP SINGH: No restriction is placed regarding the quality of rice; and quality of rice can be exported by any agency which has been permitted to export rice.

As for the second part of the question, exports are not determined by floor prices in this country but are determined by the international price of rice; that certainly is higher than the price current in the country.

श्री एस० एस० सोमानी : चूंकि आप के पास बहुत अधिक चावल का भंडार है इसलिए आप कहते हैं कि आप चावल का एक्सपोर्ट करना चाहते हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या आप देश में उचित मूल्य पर चावल उपलब्ध कराने का भी प्रयास करेंगे? आज सुपर बाजार में साढ़े पांच और पौने छः रुपये किलो चावल मिल रहा है और बहुत अच्छी किस्म का भी नहीं है और बाहर तो साढ़े छः और सात रुपये तक मिलता है। क्या आपने प्रयास किया है कि हमारे देश में भी लोगों को चावल ठीक रेट पर मिले? हमारे देश में जिस रेट पर मिलता है उसका अनुपात और बाहर जो आप भेज रहे हैं उस रेट का अनुपात क्या है?

श्री भानुप्रताप सिंह : पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम साधारण व्यक्तियों के लिए है इस वास्ते उसके द्वारा बहुत उच्च कोटि का चावल वितरित नहीं होता है। हमारी जो

खरीदारी है और जो पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम से चावल वितरित होता है साधारण किस्म का और साधारण व्यक्तियों के लिए होता है। कोई बहुत अच्छा चावल खाना चाहता है तो उसको वह खुले बाजार से ही लेना पड़ेगा।

श्री एस० एस० सोमानी : एक्सपोर्ट किस भाव पर कर रहे हैं, किस कीमत पर कर रहे हैं?

श्री भानुप्रताप सिंह : कोई कीमत नहीं है। जो अच्छी से अच्छी मिलेगी उस पर किया जाएगा।

SHRI K. SURYANARAYANA: May I know whether the government of Andhra Pradesh has approached this government to allow them sufficient quantity of rice to be exported from Andhra Pradesh to various countries through their agencies, private and public and if so what is the reaction of the Government of India and how much have they been permitted to export?

SHRI BHANU PRATAP SINGH: We have allowed the state government of Andhra Pradesh to export rice upto 30,000 tonnes.

Persons killed due to Avalanche in H.P.

SHRI KANWAR LAL GUPTA:

*741. **SHRI DURGA CHAND:**

Will the Minister of AGRICULTURE AND IRRIGATION be pleased to state:

(a) the number of persons killed and injured separately in the recent avalanches and glaciers in the Lahaul-Spiti valley of Himachal Pradesh;

(b) the details of property with the amount destroyed; and

(c) the value of relief given to the affected persons with details after the